K.Nand B.A II Hons
11 03/02/2022

- कोटि विधि (Ranking method)

⇒ शिक्षा मनोविज्ञान में कोटि विधि का भी प्रयोग कुछ खास-खास परिस्थितियों में, जैसे- बालकों के आत्मनिष्ठ शीलगुणों subjective traits का अध्ययन में किया गया है। रिली तथा लेविस (Reilly & Lewis, 1983) के अनुसार कोटि विधि का प्रयोग कुछ आत्मनिष्ठ शीलगुण जैसे ईमानदारी (honesty) तथा अन्य नैतिक एवं चारित्रिक शीलगुणों (moral and character traits) के अध्ययन में एक असमानान्तर विधि (unparallel method) के रूप में की जाती है। इस विधि में शिक्षक बालकों को या शिक्षार्थियों के किए गए शीलगुणों के आधार पर उच्च कोटि (higher rank) से निम्न कोटि (Lower rank) की दिशा में श्रेणीकरण करते हैं, जैसे शिक्षक बालकों की ईमानदारी के शीलगुण पर श्रेणीकरण करते हैं। कोटि 1, 2, 3.... इत्यादि के रूप में श्रेणीकरण कर सकते हैं। कोटी-1 में अधिकतम ईमानदारी दिखानेवाले बालक को, कोटी-2 में उससे कम ईमानदारी दिखानेवाले बालक को, कोटी-3 में उससे कम ईमानदारी दिखानेवाले बालक को और इसी तरह से सबसे अंतिम कोटी में उस छात्र को रखा जा सकता है जिसमें ईमानदारी का गुण सबसे कम हो। इस विधि को कोटि-क्रम विधि (method of rank order) भी कहा जाता है। शिक्षक इस विधि द्वारा छात्रों के शीलगुणों का अध्ययन तभी करते हैं जब छात्रों की संख्या कम होती है। कैटेल (Cattell, 1975) तथा स्कीनर (Skinner, 1965) के अनुसार यदि कोटी विधि का

P.T.O

एक उपयोग उस परिस्थिति में किया जाता है, जिसमें बालकों की संख्या अधिक होती है, तो इस विधि की विश्वसनीयता (reliability) पर कुप्रभाव पड़ता है। कोटि (ranking) कर लेने के बाद प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है और एक निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। जैसे मान लिया जाए की शिक्षक 10 बालकों को व्यक्तित्व के दो शीलगुणों अर्थात् उत्तरदायित्व (responsibility) तथा समयनिष्ठता (punctuality) पर 1, 2, 3, से 10 कोटी तथा श्रेणीकरण (ranking) करते हैं। इस तरह से शिक्षक को कोटियों का दो सेट प्राप्त हो जाता है। कोटि 1 से 10 तक उत्तरदायित्व के शीलगुण पर तथा कोटि 1 से 10 तक समयनिष्ठता (punctuality) के शीलगुण पर। इसके बाद कोटियों के इन दोनों सेटों के आधार पर विशेष सांख्यिकी (statistic) जैसे स्पीयरमैन कोटि अन्तर विधि (spearman Rank difference method) या केन्डाल कोटि अन्तर विधि (kendall Rank difference method) का प्रयोग कर शिक्षक दोनों में सह-संबंध (correlation) ज्ञात कर सकते है। कल्पना कर लिया जाए कि सह-संबंध (correlation) .88 आता है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक इन छात्रों के बारे में इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि इनमें उत्तरदायित्व एवं समयनिष्ठता दोनों ही धनात्मक रूप में सह-संबंधित (positively correlated) हैं अर्थात् उन छात्रों में उत्तरदायित्व का